मिस सूज़ी



मिरियम यंग, चित्र: अर्नोल्ड लोबेल,
हिंदी: इंदुजी





मिस सूज़ी

मिरियम यंग

चित्र: अर्नोल्ड लोबेल,

हिंदी: इंदुजी



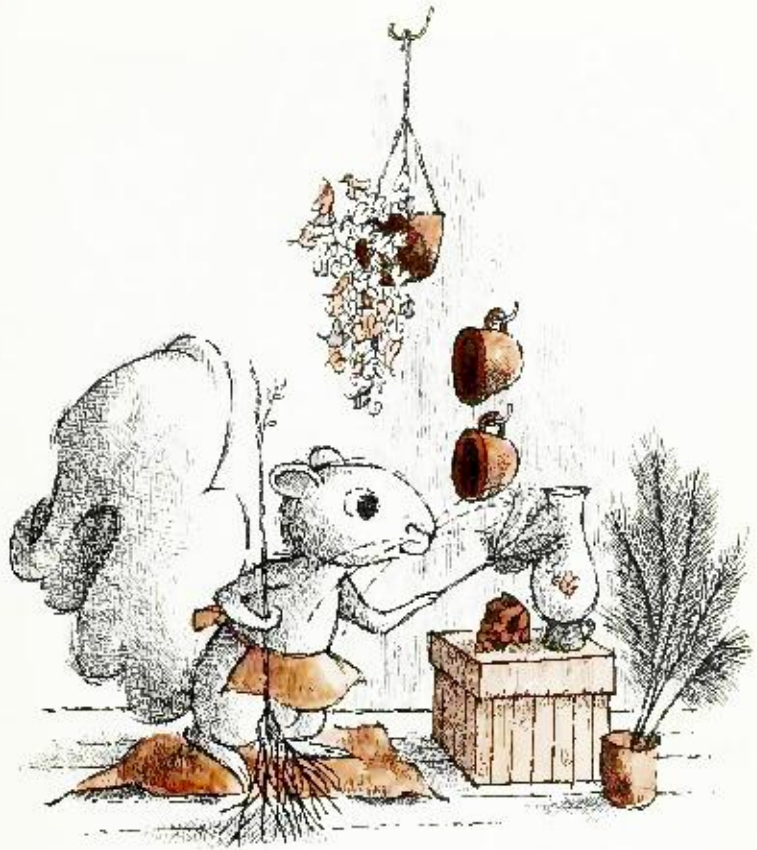
मिस सूज़ी एक नन्ही गिलहरी थी जो बलूत के एक ऊँचे पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर अकेली रहती थी. उसे खाना बनाना पसंद थी, उसे सफाई करना पसंद था और काम करते समय उसे गीत गाना पसंद था.



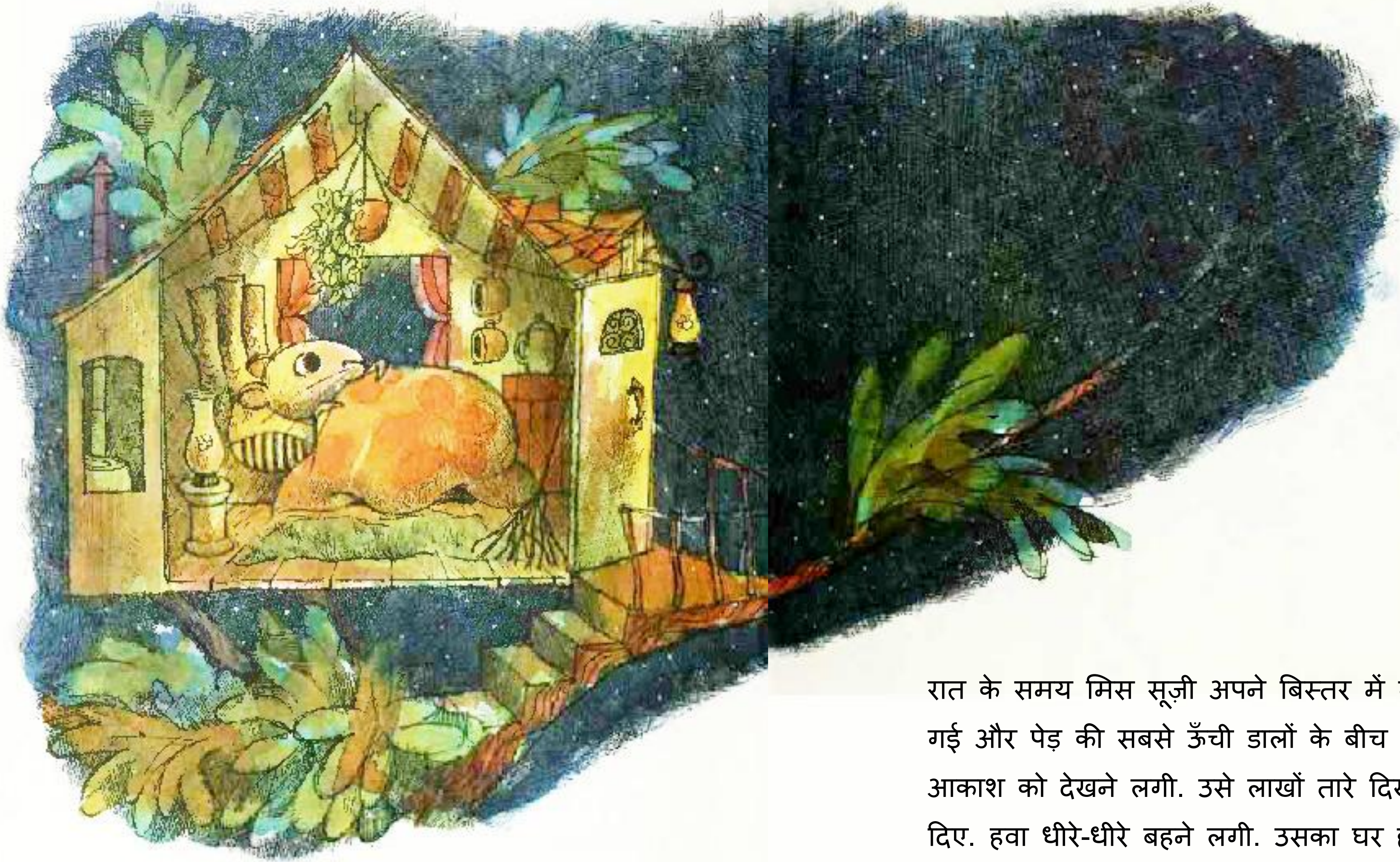
हर दिन सुबह-सुबह वह अपने लिए बलूत के फल की पुडिंग बनाती थी और पुडिंग को चलाते समय वह गाती थी:

ओह, मुझे बहुत पसंद है खाना बनाना

और आज मुझे है एक केक बनाना.



फिर उसने मेपिल पेड़ की एक टहनी से बनाए झाड़ू से काई से बने कार्पेट को साफ किया और रोटी के कणों को हटा दिया. फिर जुगनुओं के लैंप से धूल साफ की और बलूत से बने कप धोये और इस तरह अपने घर को उसने सुव्यवस्थित किया.



रात के समय मिस सूज़ी अपने बिस्तर में लेट गई और पेड़ की सबसे ऊँची डालों के बीच से आकाश को देखने लगी. उसे लाखों तारे दिखाई दिए. हवा धीरे-धीरे बहने लगी. उसका घर हवा में हिचकोले लेने लगा. हिचकोले लेते-लेते उसे नींद आ गई. हर ओर शांति थी.





लेकिन एक दिन लाल गिलहरियों का एक झुंड वहाँ आ गया और मिस सूज़ी के पेड़ के नीचे वह गिलहरियाँ कूदने लगीं, उत्पात मचाने लगीं. वह सब इतनी झगड़ालू थीं कि आपस में ही लड़-झगड़ रही थीं.

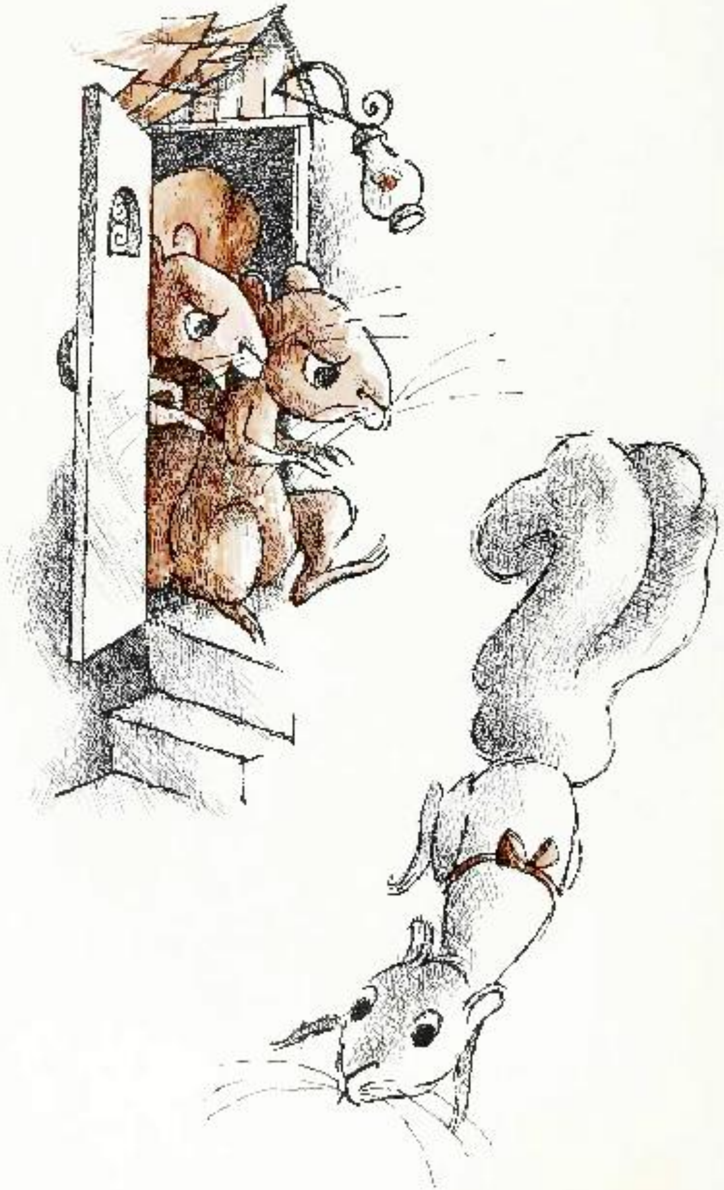
मिस सूज़ी ने उन्हें देखा ही नहीं क्योंकि उस समय वह अपनी किचन में थी. और वह उनका शोर भी न सुन पाई क्योंकि वह गा रही थी:

अपना घर है मुझे प्यारा, मुझे प्यारा

अपने बलूत पर मेरा घर है सबसे न्यारा.

वह ओवन में केक रख रही थी कि उसने घर की दहलीज़ पर कई अजनबियों को देखा. एक, दो, तीन, वह गिनने लगी, और फिर, एक, दो, तीन.... छह लाल गिलहरियाँ.







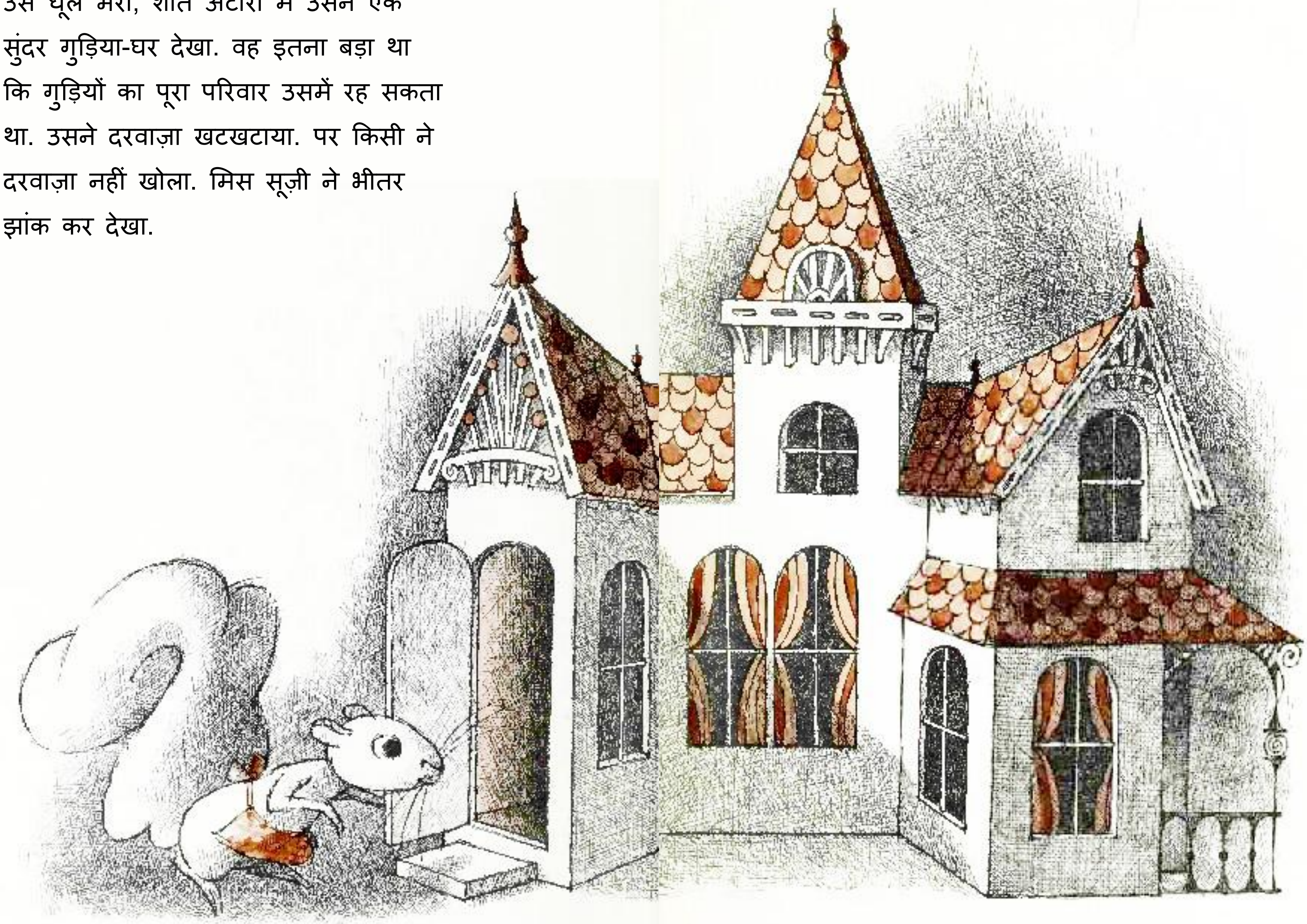
लाल गिलहरियों ने उसे उसके छोटे से घर से बाहर खदेड़ दिया. उन्होंने उसका झाड़ू तोड़ दिया और उसके बलूत के कप नीचे गिरा दिए. फिर सर्दियों के लिए जमा किए हुए सारे अखरोट और बादाम लाल गिलहरियाँ खा गईं.



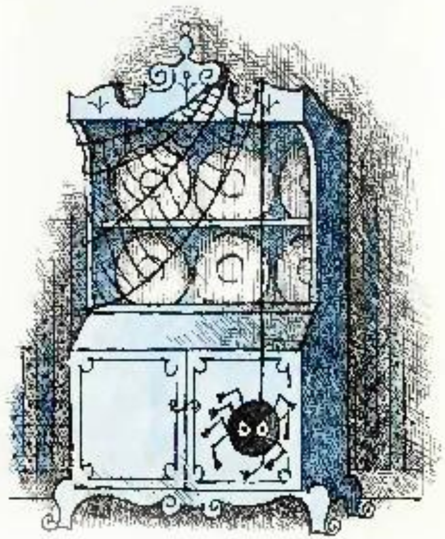
बेचारी मिस सूज़ी! उसे समझ ही न आया कि वह कहाँ जाए. जब वह सोच रही थी कि उसे क्या करना चाहिए, बारिश होने लगी. वह पास वाले पेड़ की ओर दौड़ी. वह मैपिल का पेड़ था जो एक बहुत, बहुत पुराने घर के निकट लगा था. वह दौड़ कर पेड़ एक डाल पर आ गई और वहाँ से वह घर की छत पर कूद गई. बारिश बहुत तेज़ थी और मिस सूज़ी पूरी तरह भीग गई थी. ठंड से कांपती हुई, उस बहुत पुराने घर की चिमनी से वह नीचे आई और चिमनी के एक सुराख से बाहर निकल कर वह घर की अटारी के अंदर आ गई.



उस धूल भरी, शांत अटारी में उसने एक सुंदर गुड़िया-घर देखा. वह इतना बड़ा था कि गुड़ियों का पूरा परिवार उसमें रह सकता था. उसने दरवाज़ा खटखटाया. पर किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला. मिस सूज़ी ने भीतर झांक कर देखा.







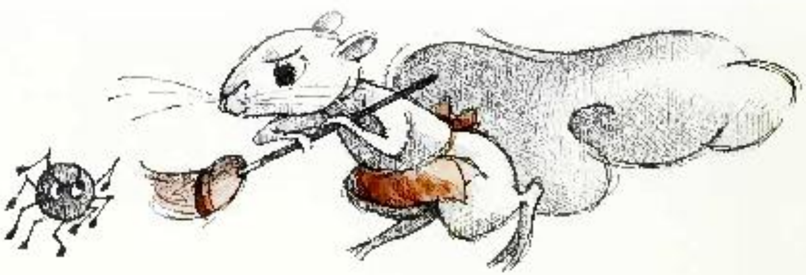
“अरे, कितना सुंदर घर है!” मिस सूज़ी ने सोचा. “यह तो किसी महारानी के रहने योग्य है. इस घर में एक हाऊस-कीपर तो होना ही चाहिए. यह जगह मेरे लिए बिलकुल उपयुक्त है.”

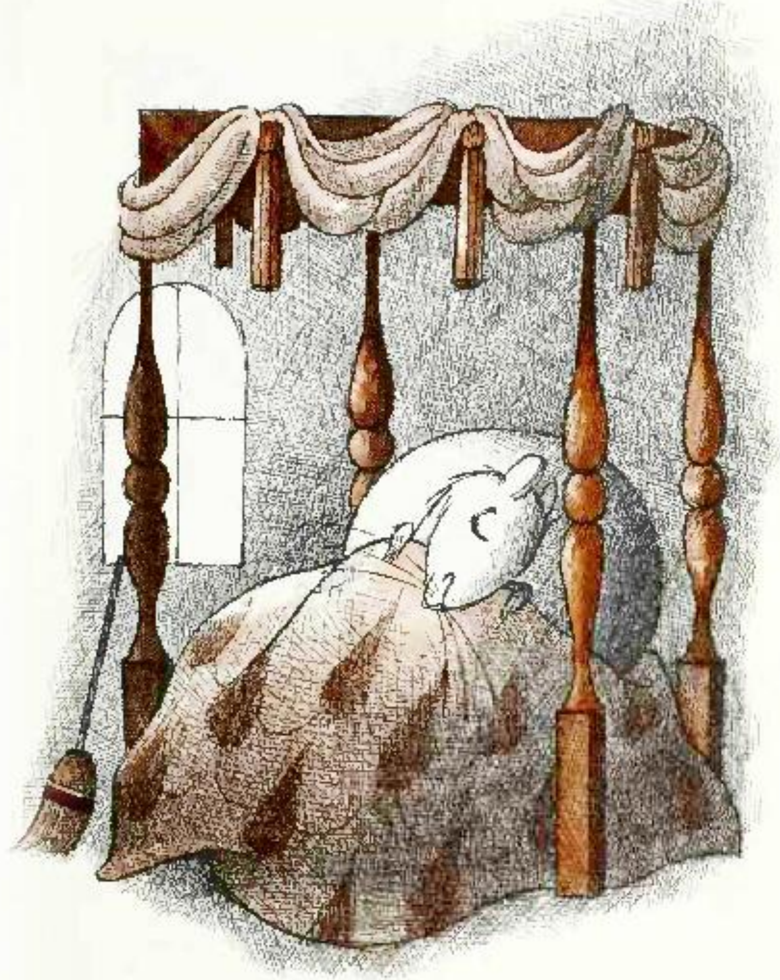
फूलदार कालीनों पर धूल जमी हुई थी और सुनहरी झूमरों पर मकड़ी के जाले चिपके हुए थे. किचन में रखे लोहे के चूल्हे और बैठक में रखे पियानो पर भी धूल थी. डाइनिंग रुम की अलमारी के अंदर रखे चीनी मिट्टी के बरतनों पर भी धूल जमी थी और मकड़ी के जाले बने हुए थे.

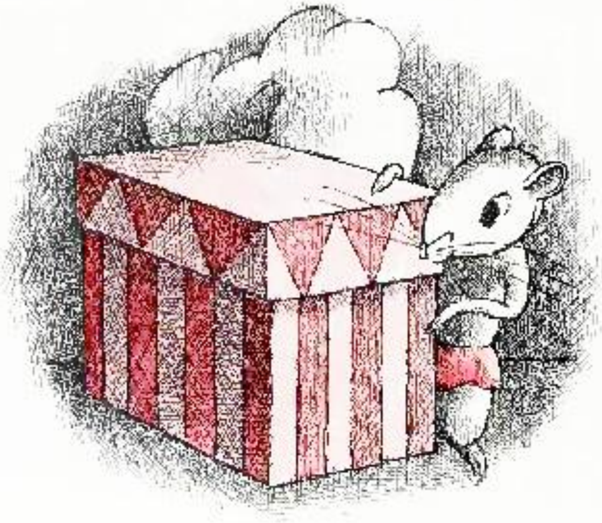


“जब इस घर की सफाई हो जायेगी तब सर्दियों के लिए यह अच्छा घर बन जायेगा,” मिस सूज़ी ने अपने आप से कहा. “लेकिन कितने खेद की बात है कि इस घर में मेरे साथ रहने वाला कोई भी नहीं है. यह घर कितना बड़ा है.”

उसने सबसे पहले फर्श की सफाई की. फिर वह ऊपर गई और वहाँ उसने बैडरुम की सफाई की. फिर वह बैडरुम में रखे विशाल बिस्तर में लेट गई और सो गई.







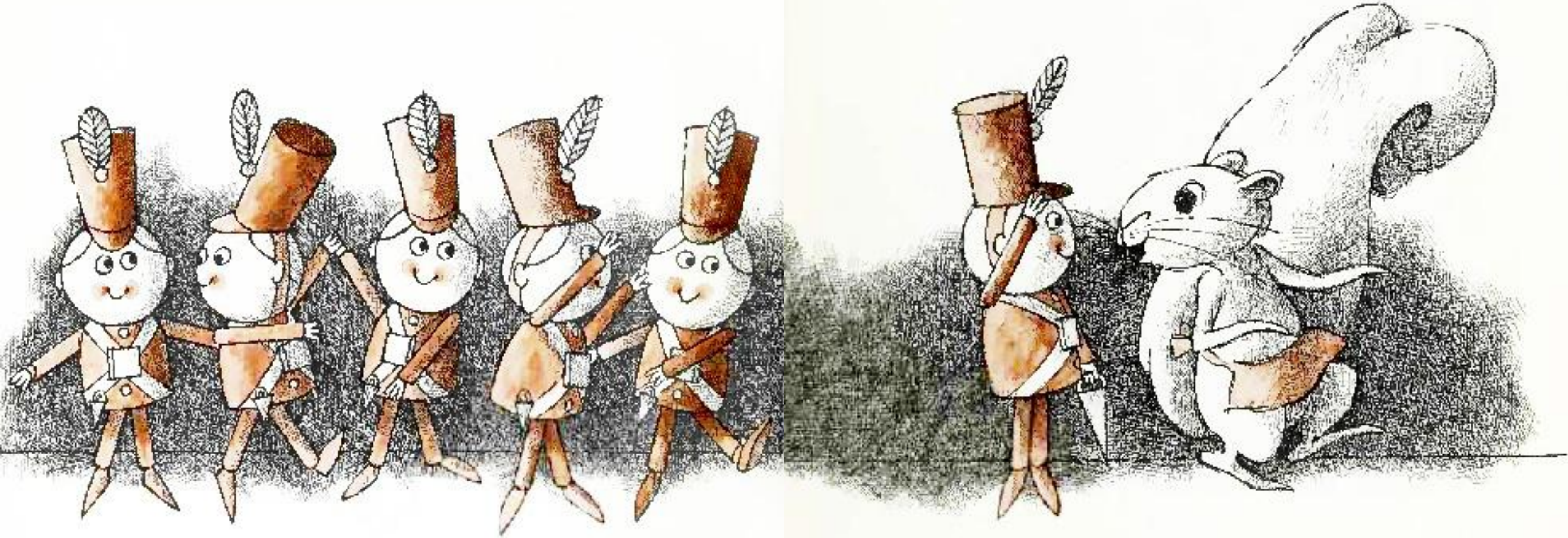
अगली सुबह जब मिस सूज़ी नींद से जगी तो उसे भूख लगी हुई थी. वह गुड़िया-घर से बाहर आई और खाने के लिए बीज और अखरोट तलाशने लगी. चलते-चलते अटारी की एक खिड़की के पास उसने एक डिब्बा देखा.

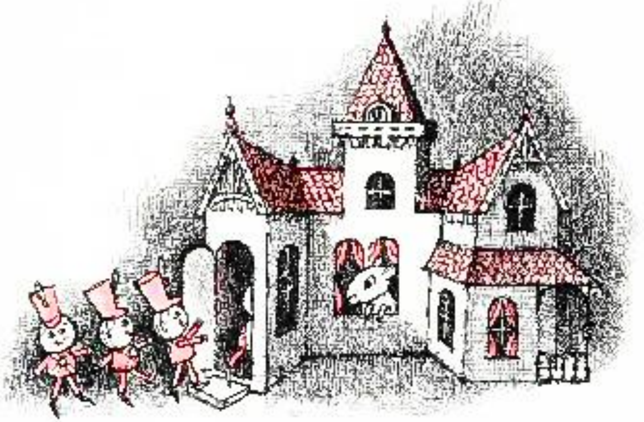
“बीज और अखरोट रखने के लिए यह बिलकुल उपयुक्त है!” मिस सूज़ी ने सोचा. उसने डिब्बा खोला. तुम्हें क्या लगता है, डिब्बे के अंदर उसने क्या देखा? डिब्बे में सैनिकों का एक समूह था. वह खिलौने थे जो वर्षों से डिब्बे के अंदर सो रहे थे.



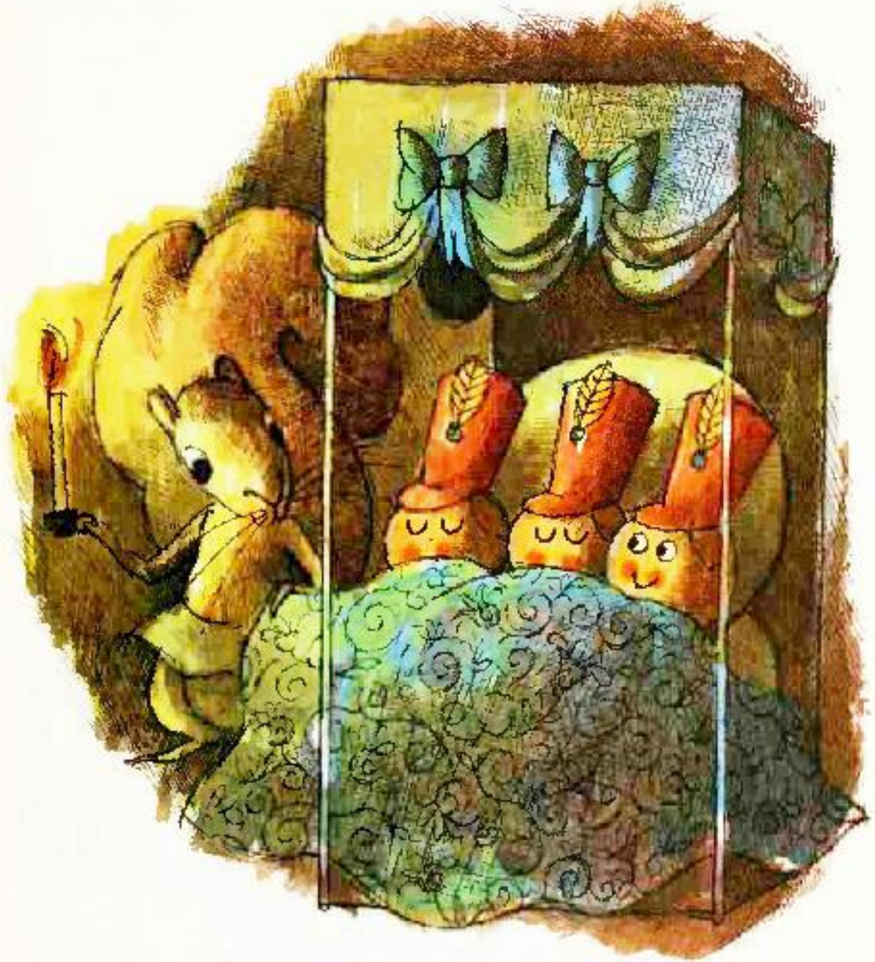
“हमें डिब्बे से बाहर निकालने के लिए धन्यवाद,” सैनिकों के कप्तान ने कहा. “अब हमें रहने के लिए जगह चाहिए.”

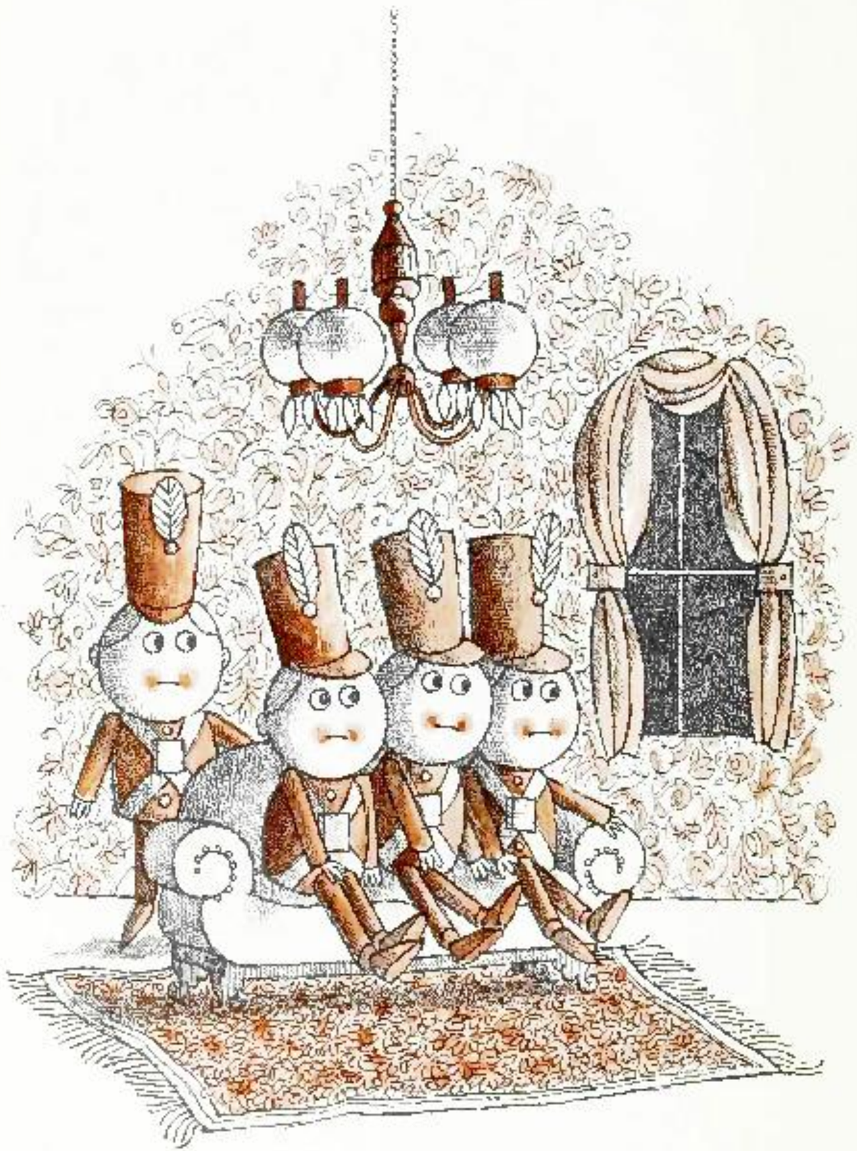
“ओह, मेरे साथ रहो,” मिस सूज़ी ने कहा.





सब खिलौने मार्च करते हुए बड़े गुड़िया-घर में आ गए और मिस सूज़ी एक माँ के समान उनकी देखभाल करने लगी. उसने उनके लिए किचन में खाना बनाया और डाइनिंग रूम में उन्हें भोजन परोसा. रात में उस ने उन्हें कहानियाँ सुनाईं और बड़े बिस्तर पर कंबल में अच्छे से ढक कर उन्हें सुला दिया. सब सैनिक बहुत प्रसन्न थे. और अधिकतर समय मिस सूज़ी भी प्रसन्न थी. लेकिन हर समय नहीं.

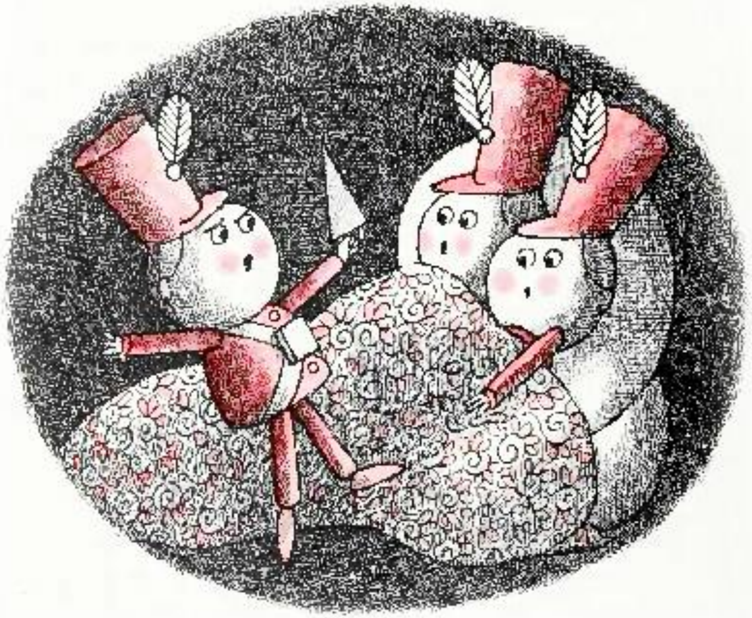




कभी-कभी वह फूलदार कालिनों को और चीनी मिट्टी की तश्तरियों और सुनहरी झूमर को देखती और एक आह भरती. उसे अपना काई से बना कालीन और जुगनू-लैंप और बलूत के फल के बने कप याद आते.

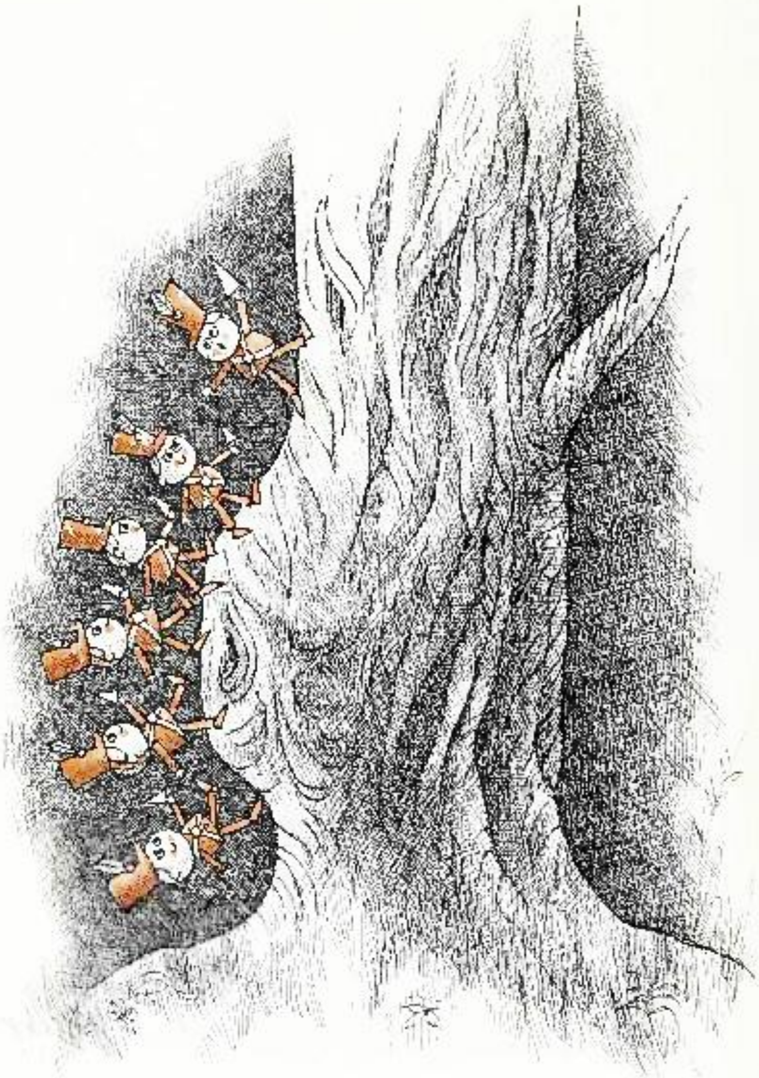
एक रात सैनिकों को कोई कहानी सुनाने के बजाय मिस सूज़ी ने उन्हें बलूत के पेड़ पर अपने पुराने घर के बारे में बताया. फिर उसने कहा कि लाल गिलहरियों ने उसे उसके घर से खदेड़ कर बाहर निकाल दिया था. यह सब सुनाते समय उसकी आँख से एक आँसू बह निकला.





उस रात कप्तान ने अपने सैनिकों को नींद से जगाया और उन्हें आदेश दिया. कुल पाँच सैनिक थे पर वह सब बहुत बहादुर थे और उनके दिल प्यार से भरे थे. आखिरकार सारी सर्दियों में मिस सूज़ी ने उनकी देखभाल की थी.

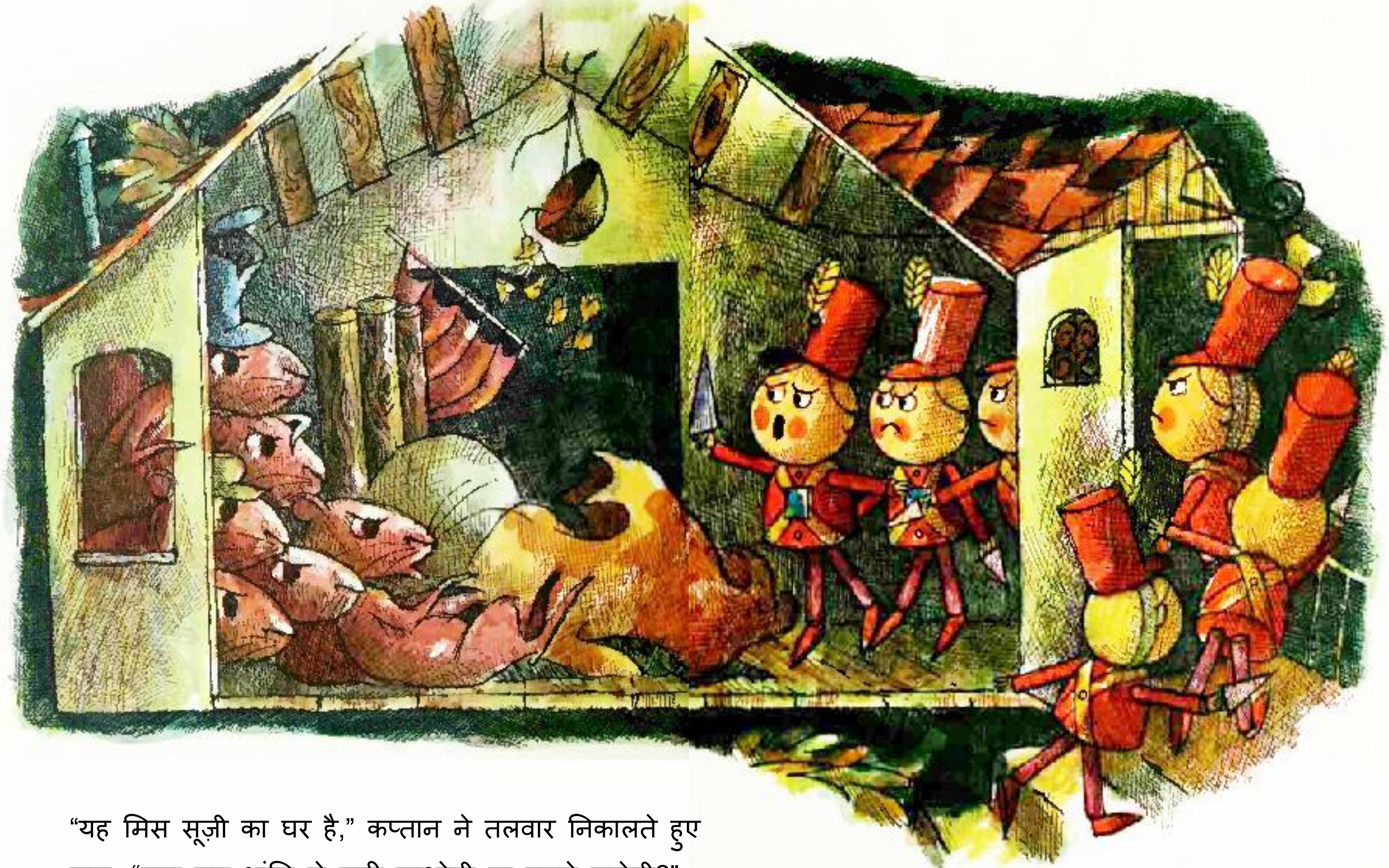




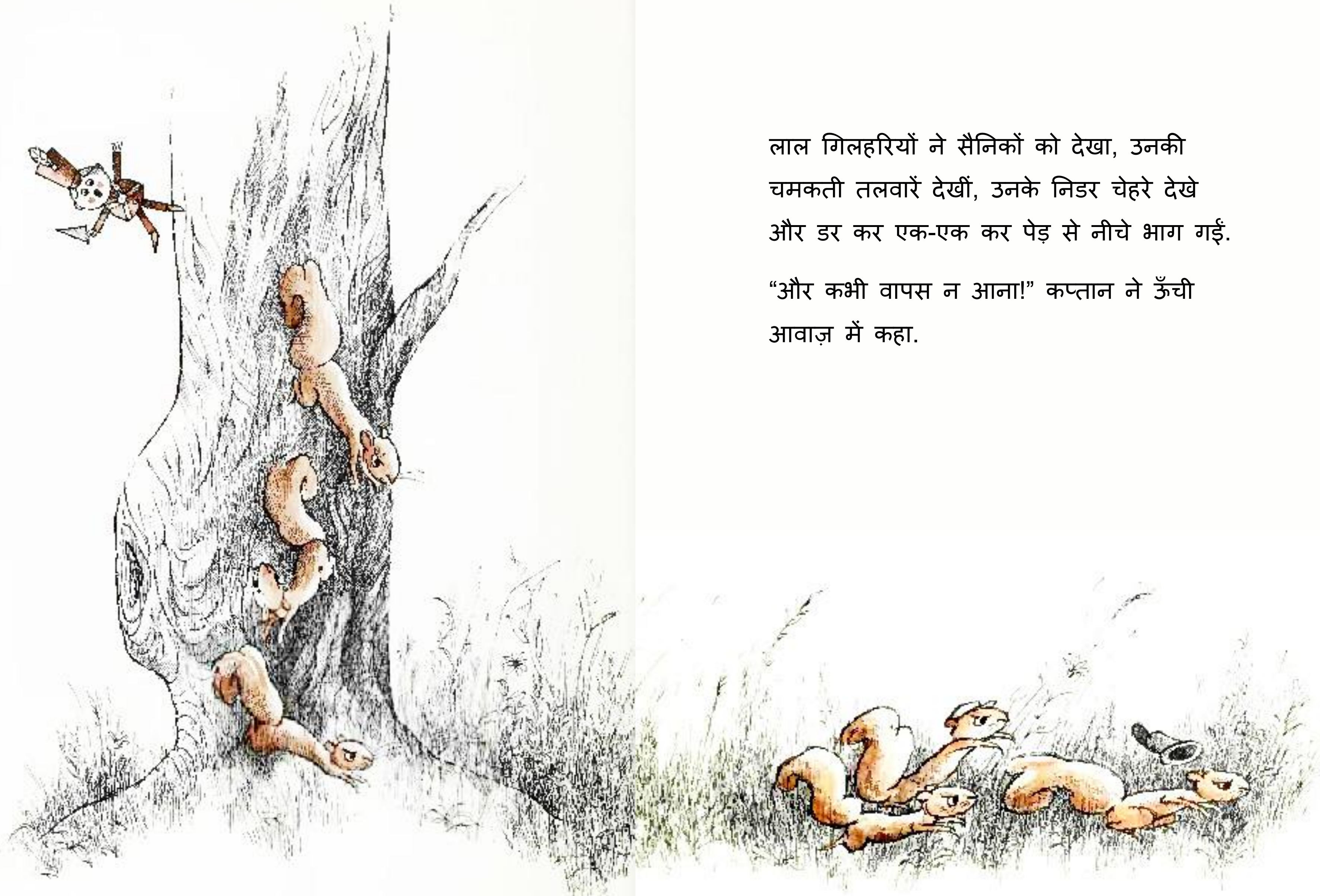
वह मार्च करते हुए बलूत के पेड़ के पास आए
और उसके तने पर चढ़ कर ऊपर आ गए.



हमेशा की तरह लाल गिलहरियाँ आपस में लड़ रही थीं.
वह इतना शोर कर रही थीं कि उन्होंने सैनिकों को ऊपर
आते सुना ही नहीं जबतक की बहुत देर नहीं हो गई.



“यह मिस सूज़ी का घर है,” कप्तान ने तलवार निकालते हुए कहा. “क्या तुम शांति से चली जाओगी या हमसे लड़ोगी?”

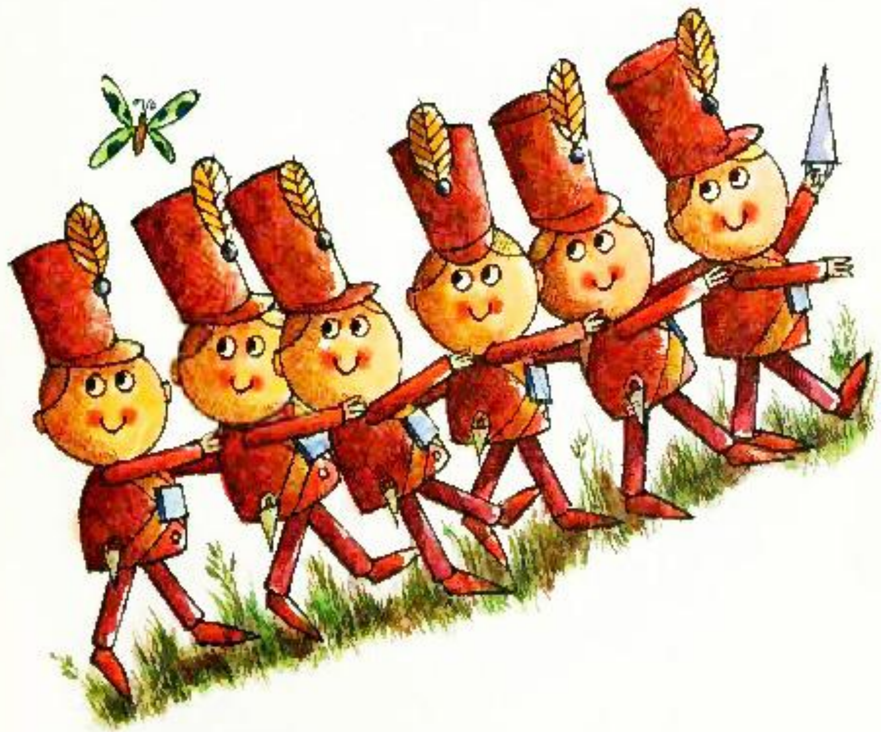


लाल गिलहरियों ने सैनिकों को देखा, उनकी चमकती तलवारें देखीं, उनके निडर चेहरे देखे और डर कर एक-एक कर पेड़ से नीचे भाग गईं.

“और कभी वापस न आना!” कप्तान ने ऊँची आवाज़ में कहा.



मिस सूज़ी को जब पता चला कि बड़े बलूत के पेड़ पर बने अपने घर में वह वापस जा सकती थी तो उसे बहुत खुशी हुई. उसने सैनिकों को धन्यवाद किया और उनसे वचन लिये कि सप्ताह में एक बार डिनर करने के लिए वह उसके घर आया करेंगे. फिर सैनिकों ने उसे अलविदा कहा और प्रसन्नता से गाते हुए जंगल के बीच से मार्च करते हुए चले गए.





. अपने घर को पहले की तरह साफ और आरामदायक बनाने के लिए मिस सूज़ी को बहुत मेहनत करनी पड़ी, लेकिन उसे बुरा न लगा. उसने काई का नया कालीन बनाया और एक नया झाड़ू बनाया और कप बनाने के लिए बलूत के फल इकट्ठे किए और अपने लैंप के लिए दो जुगनू पकड़े.

उस रात जब वह बिस्तर में लेटी तो वह बहुत थक चुकी थी. लेकिन उसने खिड़की से बाहर देखा और उसे आकाश में लाखों तारे दिखाई दिए. हवा धीरे-धीरे चल रही थे और एक पालने समान उसके पेड़ को इधर-उधर हिला रही थी. बहुत शांति थी और मिस सूज़ी एक बार फिर बहुत प्रसन्न थी

